राजकीयकृत मध्य विद्यालय भारतीकित्ता

जनजाति और जनजातिय आबादी को समटने वाला गोड्डा जिला पूर्वी भारत के झारखण्ड राज्य का एक जिला है। जो 2110 वर्ग कि0मी0 क्षेत्र में फैला है। जिसकी आबादी 1,313,551 है। प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर इस जिला की अधिकतम जनसंख्या गाँवों में बसता है। जिले के सदर प्रखण्ड मुख्यालय से लगभग 13 कि0मी0 दूर ग्रामीण परिदृश्य में राजकीकृत मध्य विद्यालय भारतीकित्ता अवस्थित है। स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग झारखण्ड सरकार द्वारा संचालित और पोषित यह विद्यालय समय–समय पर अपनू शैक्षिक सफलता में अपनी उपस्थिति दर्ज करता आ रहा है। DIET द्वारा आयोजित जिला स्तरिय प्रतियोगिता में लगातार पुरूस्कार लेकर सफलता का परचम लहरा रहा है। विद्यालय में कुल नामांकित छात्र–छात्रओं की सं0–291 है जिसमें छात्र की संख्या–145 और छात्रओं की 146 है। हमारा विद्यालय छात्र–छात्राओं को निर्माणात्मक और व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करता है जो वास्तविक जिंदगी की अनुभव पर आधारित है। इसका विकास करने में सहायक शिक्षक रविरंजन का महत्वपूर्ण भूमिका है।

सामाजिक आर्थिक संदर्भ :– रा0म0वि0 भारतीकित्ता ग्रामीण क्षेत्र में अवस्थित है। यहाँ की आबादी कृषि पर आधारित है अभावग्रस्त अभिभावक के सभी बच्चे इसी विद्यालय में पढ़ते हैं।

विद्यालय का संदर्भ :– यह विद्यालय छात्र–छात्राओं को जीवनकी वास्तविक परिस्थितियों पर आधारित शिक्षा देने का प्रयास कर रहा है। ताकि छात्र–छात्राओं का सकारात्मक दृष्टिकोण, अच्छे मूल्य, समीक्षात्मक चिंतन के कौशलों, सहयोग, रचनात्मकता, तकनीक, साक्षरता और सामाजिक भावनात्मक विकास हो सके।

विद्यालय का दृष्टिकोण :– हमारे विद्यालय का दृष्टिकोण सभी छात्र–छात्राओं में शारीरिक मानसिक बौद्धिक एवं नैतिकगुणों का विकास करना है जो शुन्य निवेश कर अधिकत्म ज्ञात का विकास करना है। इसी आवधारणा को लेकर विद्यालय में बागवानी

लकीर लगाकर बच्चों एवं अभिभावक को विद्यालय के प्रति आर्कषित किया गया। बागवानी के कारण बच्चों को विद्यालय में स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण प्राप्त हुआ और उनका ठहराव दर विद्यालय में लगभग 10% बढ़ गया।

विद्यालय का उदेश्य :– हमारे विद्यालय का मुख्य उदेश्य बच्चों को प्रकृति और पेड–पौधों से जोड़कर विद्यालय की और आर्कषित करना है। जब बच्चे विद्यालय आयेंगे तो उनका सर्वागीण विकास होगा। उनमें अच्छी आदतों का निर्माण, विचार शक्ति का विका, रूचियों का विकास के साथ–2 सामाजिक दृष्टिकोण का विकास होगा। वे पर्यावरण के प्रति जागरूक होंगे और पर्यावरण को बचाने आगे आयेंगे। ताकि धरती पर जीवन बच सकें। बढ़ते प्रदूषण ने खतरे की घंटी बजाना शुरू कर दिया। दिल्ली जैसे बड़े शहरों में प्रदूषण के कारण कई दिनों तक स्कूल बंद हो जा रहा है अगर छात्र–छात्रा ससमय नहीं जागरूक होंगे तो कहीं ऐसी स्थिति ना हो जाये कि हमेशा के लिए स्कूल जाना ही बंद हो जायेगा।

विद्यालय में नवीन पद्धतियाँ :– शुन्य निवेश कर न्यूनतम अचिगम प्राप्त करने के लिए बागवानी की आवधारणा को विकसित किया गया। ग्रामीण क्षेत्र में विद्यालय रहने के कारण बच्चों का जुड़ाव जन्म से ही पेड़–पौधों से रहता है। इसी आवधारणा के लेकर विद्यालय में नवीन पद्धतियाँ के तहत बागवानी से जोड़कर बच्चों को विद्यालय के और आर्कषित किया गया।

विद्यालय की रण नीतियाँ :–

1. छात्र–छात्राओं को विद्यालय की ओर आर्कषित करना।
2. छात्र–छात्राओं को शिक्षा के प्रति जागरूक बनाना।
3. छात्र–छात्राओं में पर्यावरण संरक्षण की आदत डालने का प्रयास करेगें।
4. छात्र–छात्राओं की बागवानी सी जाकर आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयास करेगें।

5. छात्र–छात्राओं का विद्यालय में शतप्रतिशत नामांकन करवाने के लिए विद्यालय को सजाकर आर्कषक बनायेगें।

6. छात्र–छात्राओं का विद्यालय में ठहराव दर बढ़ाने के लिए बागवानी कराकर बच्चों को प्रकृति प्रेमी बनाने का प्रयास करेगें।

7. छात्र–छात्राओं को बागवानी का अवलीकरन कराकर विभन्न, फूल, सब्जियों का नाम हिंदी, अंग्रेजी में नाम सीखाने के लिए प्रयास करेगें।

8. सुंदर विद्यालय का वातावरण बनाकर अभिभावक को विद्यालय में आने के माहौल बनाने का प्रयास करेगें।

विद्यालय की रणनीतियाँ की असफलता :– प्रारंभिक स्थिति में बागवानी की आवधारणा में कई असफलता मिली। छात्र–छात्राओं के द्वारा फूल के पौधे नष्ट किए गए। पौधे को 3 बार उजाड़कर एवं चुराकर विद्यालय को पौधा विहीन करने का प्रयास अन्य ग्रामीण्पा के द्वारा किए गए। जो मनीबल को तोड़ने वाला था।

विद्यालय में रणनीतियाँ की सफलता :– हमारे विद्यालय में रणनीति लगभग 90% सफल रही है। आज हमारे विद्यालय में चंपा, चमेली, अड़हुल, गुलाब, ऐरेका पान, स्नेक प्लांट, तगड़, बेली, कनेल, गुलादावदी बोगेन बेलिया एक्समस ट्री, अपराजिता जैसे दर्जनों मौसमी एवं सदाबहार फूल के पौधे लगे हुए है। वहीं मोरिंगा (सहजन) तेजपात, ऑल स्वाइस (गर्म मसाला) का पेड़ लगा हुआ है। वहीं तुलसी, पान, गिलोय, हरिसिंगार, मीठा नीम, मुठिया सूजू, ...डायबेरिक जैसे औषधीय पौधे लगें हुए है।

छात्र–छात्राओं को पहले पेड़–पौधे के महत्व को समझाकर उसे पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाया। छात्र–छात्राओं से स्थानीय फूल और सब्जियों के पौधे और बीज को एकत्रित करके विद्यालय में लगवाया। सब्जियों के तौर पर सहजन का उपयोग विद्यालय में किया जा रहा हैं वही बच्चों के द्वारा लगाये गये कद्दू के पौधे से लगभग 100 में अधिक फले कद्दू का मध्याह्न भोजन में उपयोग हो रहा। चूँकि बच्चे स्वंय फूल

के पौधे लगा रहा है जिसके कारण वे अब स्वंय इसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी ले रहे हैं। ससमयम सिंचाई, निराई करते हैं और वे विद्यालय में विद्यालय अवधि से अधिक समय दे रहे है। इस प्रकार बच्चों का ठहराव दर विद्यालय में बढ़ गया है। वहीं अभिभावकगण भी लेने के लिए विद्यालय में लगे औषधि पौधे का उपयोग करने के लिए विद्यालय आ रहे है। इस दौरान वे अपने बच्चे से संबंधित कई जानकारी शिक्षक की दे रहे हैं और शिक्षकों से अपने बच्चे की जानकारी ले रहा है। इस प्रकार बागवानी कराकर बच्चों में पढ़ने की रूचियों का कॉफी विकास किया जा रहा है।

सर्वे से मिली सीख :– इस तरह के सर्वे से हमें बहुत ज्यादा सीख मिली। हम कैसे नवीन पद्धति को अपनाकर शून्य निवेश कर अधिकतम छात्र–छात्राओं में न्यूनतम अधिगम प्राप्त कर सकते हैं। बच्चों को कैसे विद्यालय की ओर आर्कषित कर सकते साथ ही उनके ठहराव दर को बढ़ाकर उनका सर्वागीण विकास कर सकते हैं एवं आजीवन सीखने हेतु उनमें मजबूत नींव डाल सकते हैं।

कुछ संबंधित चित्र संलग्न है :–

समग्र शिक्षा अभियान
राजकीयकृत मध्य वि॰ भारतीकित्ता
U-DISE CODE - 20081009601 अंचल - गोड्डा (झा)